प्रज्ञान

PRAJÑĀNA

(A Peer Reviewed Journal)

Volume : 6-8 Issue : 3/2015-16 ISSN : 2278-1609

Km. Mayawati Government Girls Post Graducate College
Badalpur, Gautambudha Nagar (U.P.) - 203 207

ISSN : 2278-1609

प्रकाशक : कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर-गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली

© कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर-गौतमबुद्ध नगर

सम्पर्क सूत्र :

दूरभाष : 0120-2673010, 2673202

ई-मेल : journalkmgcbadalpur@gmail.com

सहयोग राशि

मूल्य एक अंक : 200 रुपये (शोध पत्र प्रकाशन सहित 500/-)

व्यक्तियों के लिए : वार्षिक 500/-, आजीवन 5000/-

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 700/-, आजीवन 7000/-

Note : *Views expressed in the articles belong to the authors; the organizers and publisher are not responsible for them. Also, it is assumed that the articles have not been published earlier and are not being considered for any other journal/Book.*

अनुक्रम

संपादकीय 6

समसामयिक परिवेश में धर्म, सहिष्णुता एवं राजनीति 7
डॉ. किशोर कुमार

भारतीय धर्म, सस्कृति, एवं समाज पर पर्यावरण का प्रभाव 10
डॉ. निधि रायजादा

भारतीय संस्कृति एवं त्योहारों में पर्यावरण चेतना 14
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

पब्लिक स्कूल तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था 18
सुधीर कुमार, डॉ. स्नेहलता शिवहरे

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का नामांकन एवं ठहराव 23
डॉ. रतन सिंह

जैन नीतिशास्त्र में 'त्रिरत्न' 27
डॉ. नीलम शर्मा

विश्व उत्पत्ति विषयक पौराणिक अवधारणा एवं आधुनिक विज्ञान 32
डॉ. अंजना शर्मा

माध्यमिक शिक्षा:एक कमजोर कड़ी 37
उदय प्रकाश पासवान

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डॉ॰ अम्बेडकर का योगदान 40
डॉ. राजेश कुमार यादव

भारत में भारतीय धर्म-मत एवं सम्प्रदाय में सद्भावना के तत्व की विवेचना 42
धीरेन्द्र कुमार, डॉ. सीमा देवी

स्वातन्त्रोत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास 46
डॉ. संगीता गुप्ता

भारतीय संस्कृति के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान 57
डॉ. अनीता सिंह

प्रेमचन्द का नारी विषयक सुधारवादी दृष्टिकोण 60
डॉ. मिन्तु

भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रमुख प्रयास: एक वर्णन 63
विजय कुमार

गुप्तकालीन अभिलेखों एवं साहित्य में महिलाओं की भूमिका 68
शिखा गोयल

धर्म पहचान एवं भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा 73
उपेन्द्र कुमार

भारतीय धर्म, संस्कृति, एवं समाज पर पर्यावरण का प्रभाव

–डॉ. निधि रायजादा
असि. प्रो. इतिहास
कु. मा. रा. म. स्ना. महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

प्राचीन भारतीय सभ्यता में पर्यावरण को अत्यधिक महत्व दिया गया है तथा पर्यावरण का संरक्षण करना, उसको नष्ट होने से बचाना प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी मानता था। प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति और दर्शन का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि हमारे ऋषियों, मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण के महत्व को समझ लिया था तथा इसी के अनुकूल सम्पूर्ण मानव जाति से आचरण करने का आवहन किया था। यही हमारी प्रकृति ही है जिसमें पृथ्वी पर ऊर्जा के एकमात्र स्रोत सूर्य की उपासना की जाति है, हमें प्राण-वायु उपलब्ध कराने वाले वृक्षों की पूजा की जाती है तथा अग्नि की अराधना की जाती है। हिन्दू धर्म में विभिन्न देवी देवताओं जैसे इन्द्र, विष्णु, शिव, दुर्गा, काली, आदि की उपासना के साथ ही प्रकृति पूजा पर भी बल दिया गया है। प्रकृति अराधना तो भारतीय धर्म का अभिन्न अंग है।

"पर्यावरण से अभिप्राय जीव को चारों ओर से घेरे उन सभी भौतिक स्वरूपों से है, जिनमें वह रहता है, जिनका उसकी आदतों, उसकी क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के स्वरूपों में भूमि, जलवायु, मिट्टी, की प्रकृति, वनस्पति, प्राकृतिक संसाधन, खनिज, जल-थल आदि सम्मिलित है।"

–डी. डेविस

पर्यावरण दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् परि + आवरण। "परि" का शाब्दिक अर्थ है– "चारों ओर" तथा "आवरण" का शाब्दिक अर्थ है– "घेरने वाला"। अतः पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है– चारों ओर से घेरने वाला। हम जिस परिवेष में रहते है वह हमारा पर्यावरण है। भूमि, जल, वायु, पशु-पक्षी, वनस्पति, पेड़ पौधे सब मिलकर पर्यावरण मे अपना जीवन यापन करता है तथा अंत में पर्यावरण मे ही लीन हो जाता है। प्रत्येक जीव का अपना अलग पर्यावरण होता है। मिट्टी में रहने वाले सूक्ष्म जीवों के लिये मिट्टी, घस फूस ही उनका पर्यावरण है जबकि जलीय जीवों के लिये चारों ओर फैला हुआ समुद्र जल अथवा नदी, जलीय वनस्पति तथा अन्य जलीय जीव उनका पर्यावरण होता है। इसी प्रकार मानव के लिये चहु ओर फैली वायु, जल, और थल उसका पर्यावरण होता है। जल, थल और वायु में रहने वाले अन्य छोटे बड़े जीव जन्तु और पेड़ पौधे भी मानव तथा उसके पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण एक अत्यन्त व्यापक और विस्तारित विषय है। पृथ्वी पर उपस्थित सभी कुछ, किसी न किसी रूप में पर्यावरण के अन्तर्गत आता है। बुडवर्थ के अनुसार– "पर्यावरण शब्द का अभिप्राय उन सब बाहरी शक्तियों एवं तत्वों से है जो व्यक्ति को आजीवन प्रभावित करते है।"

हर्स कोविट्स एम. जे. के अनुसार– "पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है जो जीवधारियों के जीवन, उनके विकास और उनकी क्रियाओं को प्रभावित करता है।"

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के महानिदेशक श्री लक्ष्मीधर के अनुसार," पर्यावरण उन सभी प्राकृतिक संसाधनों की समग्रता का नाम है, जो पृथ्वी ने मानव जाति के लिये वरदान के रूप में दिये हैं। पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति, वन और वन्य जीव सभी प्रतिदिन हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में यदि हम पर्यावरण और इसके सरंक्षण का अध्ययन करें, तो हमारी भारतीय संस्कृति, समाज, नैतिक मूल्यों व जीवन दर्शन से इसका गहरा जुड़ाव है। प्राचीन समय में जब मानव जाति का विकास प्रारम्भ हुआ तो सभी विश्व की सभ्यतायें नदियों के किनारे विकसित हुई। ऐसा होना स्वाभाविक ही था। जब सिंचाई, यातायात के साधन विकसित नहीं थे तो अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव ने नदियों के किनारे के स्थान को अपना निवास स्थानन बनाकर वहाँ बसना प्रारम्भ किया। मिस्र

ISSN : 2278-1609

की सभ्यता, सुमेयिन सभ्यता, मैसोपोटामियन सभ्यता व सिन्धु घाटी की भारतीय सभ्यता इन सबका अद्भुत उदाहरण हैं।

प्राचीन भारतीय सभ्यता में पर्यावरण को अत्यधिक महत्व दिया गया है तथा पर्यावरण का संरक्षण करना, उसको नष्ट होने से बचाना प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी मानता था। प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति और दर्शन का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि हमारे ऋषियों, मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण के महत्व को समझ लिया था तथा इसी के अनुकूल सम्पूर्ण मानव जाति से आचरण करने का आवहन किया था। यही हमारी प्रकृति ही है जिसमें पृथ्वी पर ऊर्जा के एकमात्र स्रोत सूर्य की उपासना की जाति है, हमें प्राण-वायु उपलब्ध कराने वाले वृक्षों की पूजा की जाती है तथा अग्नि की अराधना की जाती है। हिन्दू धर्म में विभिन्न देवी देवताओं जैसे इन्द्र, विष्णु, शिव, दुर्गा, काली, आदि की उपासना के साथ ही प्रकृति पूजा पर भी बल दिया गया है। प्रकृति अराधना तो भारतीय धर्म का अभिन्न अंग है ही, इसके साथ ही यहाँ अनेक जानवर जैसे– गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, बैल आदि भी पूज्यनीय हैं। भारतीय संस्कृति में 'अहिंसा' को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हिन्दू धर्म, बौद्धधर्म व जैन धर्म सभी अहिंसा के पक्षधर हैं। जीव जन्तुओं के विनाश को हमारे शास्त्रों में अक्षम्य (क्षमा करने के अयोग्य) बताया गया है और सूर्यास्त होने के उपरांत पेड़ पौधों तक को छूने की मनाही है। ऐसा माना गया है कि सभी चेतन वस्तुओं (मनुष्य, पशु पक्षी, व पेड़ पौधे) में आत्मा का वास है व इनकी रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। तैत्तरीय उपनिषद् में कहा गया है कि– "ईश्वरीय आत्मा से आकाश की, आकाश से वायु की, वायु से अग्नि की, अग्नि से जल की और जल से पृथ्वी की उत्पत्ती हुई। पृथ्वी ने पेड़ पौधों को जन्म दिया, अन्न उपजाया और सभी जन्तुओं को जीवन दिया। इस प्रकार इस सृष्टि में प्रत्येक जीव जंतु की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।" भारतीय संस्कृति और दर्शन में ईश्वर, प्रकृति तथा सभी जीव जन्तुओं में संबंध स्थापित किया गया है। 'अहिंसा परमो धर्मः', अहिंसा परम धर्म है, इस प्रकार की सोच का कारण भारतीय पर्यावरण ही है। भारतीय संस्कृति में अनेक ऋषियों, मुनियों, संतो, विचारकों का प्रार्दुभाव– पर्यावरणीय आधार पर उनके लिये उपयुक्त वातावरण होने का संकेत देता है।

भारत एक ओर हिमालय एवं तीन ओर से समुद्र से घिरा होने के कारण संसार से अलग भौगोलिक इकाई बन गया और यहाँ एक विशेष सभ्यता एवं संस्कृति का उदय हुआ। डॉ. राय चौधरी भारत की भौगोलिक और पर्यावरणीय स्थिति के विषय में लिखते हैं कि–

"भारत की महान पर्वत श्रृंखला ने इस देश को एशिया से अलग कर दिया और इसे एक ऐसा देश बना दिया जो अपने में ही एक संसार के समान है और इस प्रकार यहाँ एक अलग प्रकार की सभ्यता को विकसित होने में सहयोग दिया है।" हिमालय के घने जंगलों में अनेक एकान्त स्थान हैं। इन एकान्त जंगलों में अनेक ऋषियों मुनियों को तपस्या साधना करने के लिये प्रेरित किया तथा इन्हीं एकान्त स्थानों में अनेक धार्मिक ग्रन्थों की रचना की गयी। यहां की पर्यावरणीय स्थिति ने भारत को आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर किया। प्राचीन काल से ही भारतीयों की रूचि आध्यात्म और धार्मिक क्रियाकलापों की ओर थी। इसी कारण अनेक विदेशियों का तो यहाँ तक कहना है कि भारतीयों को इतिहास लेखन में रूचि नहीं थी न ही उन्हें तिथिक्रम का ज्ञान था। ऐसे इतिहासकारों में फलीट, एलिंसटन, स्मिथ, मजूमदार व त्रिपाठी प्रमुख हैं। इस मत के खण्डन में यह कहा जा सकता है कि जब विश्व के अनेक देश इतिहास लेखन में व्यस्त थे, उस समय भारतवर्ष में विशाल धार्मिक साहित्य का सृजन हुआ। अतः यह मानना कि भारतीयों में इतिहास-बुद्धि न थी, सर्वथा असंगत है। आध्यात्म-प्रधान समाज होने के कारण प्राचीन भारतीय लेखन का उद्देश्य राजनैतिक घटनाओं का वर्णन करना न होकर धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक व सामाजिक परम्पराओं को जीवित रखना था। हिन्दू धर्म के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिशद, वेदांग, रामायण, महाभारत, पुराण आदि लिखे गये। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म के अन्तर्गत त्रिपिटक-विनय, सूत व अदिदम्भ पिटक तथा जातक ग्रन्थों की रचना हुई तथा जैन धर्म के अन्तर्गत भी अनेक ग्रन्थों भद्राबाहुचरित, परिशिष्टपर्व, लोक विभाग आदि लिखे गये। इन सभी धर्म ग्रन्थों की रचना का एकमात्र कारण भारत के

ISSN : 2278-1609